दृष्टि *The Vision*

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-1

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-23	**HL-2301**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक* : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Arpit Kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): —

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 22/06/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	6	5	6	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Evaluator (Code & Signatures)*	पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Reviewer (Code & Signatures)*

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

12वीं - 13वीं सदी में अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली आज के वर्तमान स्वरूप के ही समान उपस्थित है, जो आश्चर्यचकित करने वाला है।

अमीर खुसरो को खड़ी बोली के प्रथम कवि की संज्ञा प्राप्त है.

खुसरो दरिया प्रेम का उल्टी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया जो डूबा सो पार

खुसरों का काव्य तीन प्रकार का है प्रथम जहाँ खड़ी बोली ब्रज भाषा के साथ मिश्रित स्वरूप में आती है.

खुसरो दरिया प्रेम का ......

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दूसरा वह जिसमें खड़ी बोली संपूर्णता के साथ उपस्थित है यथा-

खीर बनायी जतन से चरखा दिया चलाय
आकर कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा।

"अमीर खुसरो की खड़ी बोली के उपर्युक्त स्वरूप को देखते हुए आचार्य शुक्ल को यह कहना पड़ा है कि -

क्या भाषा उस समय तक घिसकर इतनी चिकनी हो गयी थी। जितनी खुसरो काव्य में विद्यमान है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

महाराष्ट्र तथा संपूर्ण दक्कन क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में तिलक का अतुलनीय योगदान रहा है।

1. लोकमान्य तिलक ने अपने लेखन में मराठी के साथ-साथ हिंदी का भी प्रयोग किया।

2. चूँकि तिलक अखिलभारतीय नेता थे अतः वे हिंदी के अच्छे वक्ता रहे हैं और हिंदी के प्रयोग को सार्वजनिक मंचों में संभव बनाते रहे हैं।

3. 'मराठी साहित्य परिषद' के गठन में तिलक का विशेष योगदान रहा है।

4. मराठी साहित्य परिषद ने हिंदी के विकास में मिशन के रूप में कार्य किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. तिलक, सावरकर तथा काका कालेलकर आदि के साथ सहयोग स्थापित कर हिंदी के विकास को महाराष्ट्र के बाहर भी संभव बना रहे थे।

6. तिलक द्वारा स्वदेशी आंदोलन के दौरान, हिंदी के महत्व पर विशेष बल दिया गया।

7. आगे तिलक गांधी तथा अन्य के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य करते रहे।

"आज यदि मराठी तथा हिंदी भाषी क्षेत्रों में समन्वय व सौहार्द होता है तो उसमें लोकमान्य तिलक का विशेष योगदान है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तम दास टंडन का योगदान हिंदी के व्याकरण को तैयार करने, भाषा को मानक स्वरूप देने तथा उसके प्रचार प्रसार में रहा है।

हिंदी भाषा का व्याकरण तथा पुरुषोत्तम दास टंडन

- टंडन जी ने किशोरीदास वाजपेयी के साथ मिलकर हिंदी का व्याकरण तैयार किया।
- पुरुषोत्तमदास जी ने हिंदी को राजभाषा बनाने में विशेष प्रयास किया
- टंडन जी लोकसेवा मंडल के सभापति के रूप में हिंदी का राष्ट्रव्यापी प्रचार प्रसार किया.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- पुरुषोत्तमदास टंडन के व्याकरण लेखन की सहायता से ही आगे पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में सहायता मिली
- टंडन जी ने भाषा के मानकीकरण को प्रोत्साहित किया।

"पुरुषोत्तमदास टंडन, मालवीय जी की परंपरा में दीक्षित होकर आजीवन मातृभाषा हिंदी की सेवा-सुश्रुषा करते रहे।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहीम मुगल दरबार में हिंदी भाषा के प्रतिनिधि कवि थे, उनकी रचना मदनाष्टक खड़ी बोली की प्रमुख रचना है।

मदनाष्टक के साथ-साथ रहीम के साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग बरवै नायिका भेद में भी देखने को मिलता है।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी गए न उबरे, मोती मानुस चून॥

उपर्युक्त दोहा मध्यकाल में खड़ी बोली के स्वरूप को प्रदर्शित करता है। जो शब्द चयन, बोधगम्यता तथा अर्थ की प्रभाविता किसी भी दृष्टि से वर्तमान खड़ी भाषा से कमतर नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मदनाष्टक लघु स्वरूप की खड़ी बोली की रचना है. यह मध्यकाल की एकमात्र ऐसी रचना है जो पूरी तरह से खड़ी बोली में रची गयी है।

साथ ही रहीम का निम्न दोहा उनकी खड़ी बोली की विशेषता को दक्षता के साथ उद्घाटित करता है-

रहिमन ओछे नरन सो बैर भली न प्रीति
काटे चाटे श्वान के दुहूँ भाँति विपरीत।।

"इस प्रकार रहीम साहित्य तथा खड़ी बोली दोनों एक- दूसरे को परस्पर परिवर्द्धित करते हैं।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'मारवाड़ी' बोली

मारवाड़ी, राजस्थानी भाषा वर्ग की प्रमुख बोली है. जो मारवाड़ तथा अन्य क्षेत्रों में बोली जाती है-

व्याकरणीक विशेषताएँ.

1. ट वर्ग की बहुलता
2. मराठी ळ ध्वनि भी उपस्थित
3. पुल्लिंग ओकारांत रूप में पाये जाते हैं.
4. राज्यो, तारो आदि
5. बहुवचन के अंत में आँ का प्रयोग
6. महाप्राण ध्वनि का अल्प्राणीकरण की
7. विशेष प्रवृत्ति.
   हाथ > हात
   भूख > भूक
8. न की जगह 'ण' का प्रयोग
   रान्यो > राण्यो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

9. सर्वनाम के रूप में म्हारी, थारो, जिण उण का प्रयोग

10. को उपसर्ग की जगह 'नै' उपसर्ग का प्रयोग

11. से परसर्ग की जगह सूँ परसर्ग

"इस प्रकार मारवाड़ी अपनी भाषायी विशेषताओं के द्वारा, राजस्थानी उपभाषा वर्ग को समृद्ध कर रही है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

लिपि भाषा का लिखित व स्थायी रूप होता है तथा यह भाषा की सभी ध्वनियों के लिए निर्धारित प्रतीक चिन्हों की सामूहिक संज्ञा भी होती है।

संक्षेप में भाषा नींव है तो लिपि उसी पर स्थापित भवन.

सामान्यतः देवनागरी लिपि वर्तमान अन्य लिपियों की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक है फिर भी इसकी अपनी कुछ सीमाएँ हैं जो निम्न प्रकार हैं :-

1. वर्तमान समय द्रुतसमय है ऐसे में देवनागरी लिपि की बनावट उसके लेखन कार्य को अन्य लिपियों की अपेक्षा शिथिल करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. देवनागरी लिपि की दूसरी कमी इसकी वर्णमाला है जहाँ अंग्रेजी में सिर्फ 26 अक्षर हैं, वहीं देवनागरी लिपि अनावश्यक रूप से लंबी है।

3. सूक्ष्म विश्लेषण करने पर इसमें मौजूद कुछ वर्ण अनावश्यक प्रतीत होते हैं यथा-
ई, ऊ, ऐ, ए, लृ, लृ आदि।

4. विद्वानों द्वारा देवनागरी लिपि की मात्रा व्यवस्था पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े किये गये हैं
⇓
देवनागरी लिपि की मात्रा व्यवस्था अवैज्ञानिक है; कभी मात्राएँ बायीं ओर तो कभी दायीं ओर लगती हैं वहीं कभी इनकी व्यवस्था

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

शब्दों के नीचे ठहरती है।

5. इन सभी कमियों का परिणाम यह होता है कि लिपि का मुद्रण व टंकन जटिल हो जाता है जिससे धन व समय दोनों का अपव्यय होता है।

6. शिरोरेखा का प्रयोग वर्तमान समय में अपनी प्रासंगिकता खो चुका है तथा यह लेखन में लगने वाले समय की मात्रा में वृद्धि करता है।

7. भाषायी वैज्ञानिकों के मध्य अनुस्वार तथा अनुनासिक के प्रयोग को लेकर असमंजस की स्थिति विद्यमान रहती है।
यथा- गंभीर तथा गम्भीर दोनों का प्रयोग होना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. कुछ वर्णों के लेखन ढंग में समानता पायी जाती है यथा:

ख तथा र
ध तथा घ
म तथा भ

9. अंत में संयुक्ताक्षरों का प्रयोग भी लिपि की जटिलता में वृद्धि करता है।

यथा: क्षत्रिय, अवज्ञा

"संपूर्णता में देवनागरी लिपि व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक लिपि है अत: इन सूक्ष्म कमियों का निराकरण, लिपि को और सशक्त करेगा।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

अवधी बोली का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है तथा यह मुख्यत: लखनऊ, अवध, फैजाबाद क्षेत्रों में बोली जाती है।

व्याकरणीक स्वरूप:

1. अवधी में वर्तमान, भूत तथा भविष्य काल में सहायक क्रियाओं का निम्न स्वरूप पाया जाता है-

- वर्तमान सहायक क्रिया → ह रूप
- भूतकाल —— → भ रूप
- भविष्यकाल —— → ब रूप

2. ध्वनि संरचना:

व का ब हो जाना
ऋ > रि ——

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. स्वर भक्ति की उपस्थिति.
प्रकार > परकार.

4. अवधी में पुल्लिंग उकारांत तथा स्त्रीलिंग इकारांत प्रवृत्ति दिखाते हैं.

5. द्विवचन का प्रयोग प्रायः अनुपस्थित है

6. बहुवचन के प्रयोग हेतु न्ह का प्रयोग किया जाता है.
रतन हुआ जिन्ह हाथन सेती ।।.

साहित्यिक विशेषताएँ.

1. अवधी सूफी काव्य धारा तथा रामभक्ति काव्यधारा दोनों की प्रतिनिधि भाषा है।

2. अवधी में उपस्थित लोकमंगलकारी भावना उसे ब्रज भाषा के समानांतर भक्ति काल में स्थान दिलाती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. अवधी हिंदी में अपने माधुर्य के लिए सामादृत है।
जायसी साहित्य में अद्भुत माधुर्य है तथा - - - . . यह माधुर्य भाषा का माधुर्य है। आचार्य शुक्ल.

4. अपने औदात्य तथा समावेशी गुणों के कारण यह प्रबंधकाव्य हेतु काव्य भाषा थी।

" अपनी भाषायी विशेषताओं के साथ २ अवधी को जायसी तथा तुलसी जैसे शिरोमणि कवियों का आश्रय मिला, जो इसके विकास में अत्यंत सहायक रहा"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली गद्य के विकास में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

19 वीं सदी में ब्रज भाषा को प्रतिस्थापित करने तथा खड़ी बोली की आरंभिक स्थापना में फोर्ट विलियम कॉलेज की उल्लेखनीय भूमिका रही है।

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना अंग्रेजों द्वारा ब्रिटिश कार्मिकों को भारतीय परिस्थितियों का ज्ञान कराने हेतु की गयी थी तथा सौभाग्यवश भाषायी माध्यम के रूप में खड़ी बोली को चुना गया जो आधुनिक भाषा के रूप में खड़ी बोली के लिए युगांतरकारी घटना साबित हुयी।

फोर्टविलियम कॉलेज में खड़ी बोली के संवर्द्धन तथा लोकप्रियता की वृद्धि में चार (4) अध्यापकों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की विशेष भूमिका रही है-

1. लल्लूलाल
2. सदलमिश्र
3. इंशाअल्ला खाँ
4. सदासुखलाल

लल्लूलाल ने अपनी रचना <u>प्रेम सागर</u> के माध्यम से खड़ी बोली की सेवा की तथा इनका एक प्रसिद्ध कथन है - यामिनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ी बोली अपनाना वर्तमान में प्रासंगिक है।

सदल मिश्र ने नासिकेतोपाख्यान तथा अध्यात्म रामायण के माध्यम से खड़ी बोली में कार्य किया। इनके लेखन में पूर्वी हिंदी के शब्द भी देखने को मिलते हैं -

एक दिन एक समय राजा जनमेजय गंगा के तीर पर .....

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इंशाअल्ला खाँ की रानी केतकी की कहानी को हिंदी की प्रथम कहानी की संज्ञा दी जाती है (हालांकि विवादित भी)।

सदासुखलाल की खड़ी बोली के लेखन में पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों प्रयोग देखने को मिलते हैं तथा इन पर ग्रामीण झलक भी है।

"इस प्रकार इन चारों लेखकों के माध्यम से फोर्ट विलियम कॉलेज ने खड़ी बोली की नींव तैयार की। जिस पर इमारत बनाने का कार्य भारतेंदु तथा द्विवेदी युग ने किया।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

सिद्ध साहित्य बौद्ध पंथ वाममार्गी शाखा से प्रभावित सांप्रदायिक साहित्य है। पं. सांकृत्यायन के अनुसार सिद्धों की संख्या 84 मानी गयी है जिसमें सरहपा, शबरपा तथा कण्हपा प्रमुख हैं।

सिद्ध साहित्य, मिश्रित बोली का साहित्य है जिसमें ब्रज तथा अन्य भाषाओं के साथ-साथ खड़ी बोली भी उपस्थित है- यथा-

घर ही बइसी दीवा जाली, कोणहिं बईसी घेडा चालेर ।।

सिद्ध साहित्य में उपस्थित प्रारंभिक खड़ी बोली में उकारबहुलता तथा तद्भव व देशज शब्दों की प्रधानता विद्यमान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पंडित सभल सत्य बकखाज्ञ
देहहिं बुद्ध बसंत प जाणम ॥

"इस प्रकार सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप देखने को मिलता है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

कन्नौजी बोली पश्चिमी हिंदी उपभाषा परिवार की प्रमुख बोली है, जार्ज ग्रियर्सन द्वारा इस बोली को अलग भाषा की भी संज्ञा दी जाती है।

क्षेत्र: इटावा, फर्रुखाबाद, कानपुर, हरदोई

विशेषताएँ:

1. कन्नौजी बोली में पुल्लिंग उकारांतता पायी जाती है।
   रामु, श्यामु, किसानु
2. अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति
   बात > बाँतु
   रात > रांत
3. इस बोली में मध्यम ह का लोप देखा जाता है।
4. आरंभिक अ का औ होने की प्रवृत्ति पायी जाती है यथा.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बकरा > बोंकरा।

"इस प्रकार कन्नौजी बोली अपनी विशिष्ट प्रवृत्तियों के कारण ब्रज भाषा से विलक्षण स्थान रखती है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विकारी और अविकारी पद

विकारी और अविकारी पद किसी भी भाषा की व्याकरण व्यवस्था को निर्धारित करते हैं।

विकारी पद

ऐसे पद जो लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तित होने की प्रवृत्ति रखते हैं यथा

- संज्ञा
- सर्वनाम ⇒ संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त
- क्रिया ⇒ कार्य होना
- विशेषण ⇒ संज्ञा तथा सर्वनाम दोनों की विशेषता

अविकारी पद

ऐसे पद जो लिंग, वचन तथा काल के सापेक्ष अपरिवर्तनीय होते हैं। अविकारी पद कहलाते हैं।

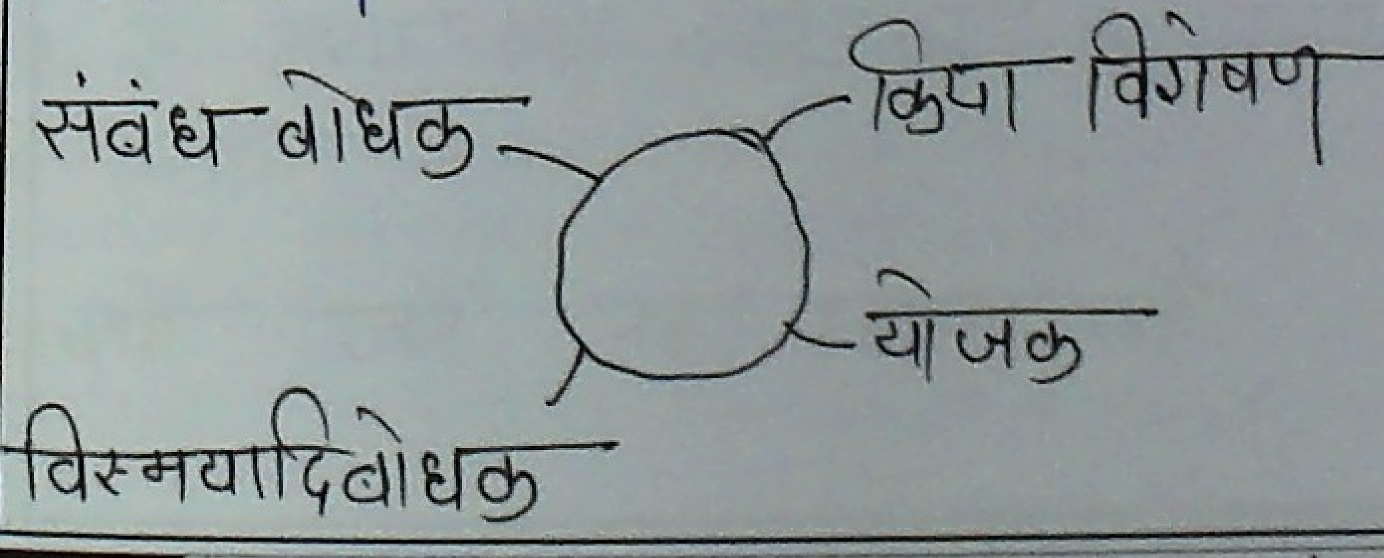

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विकारी तत्वों के परिवर्तन हेतु कुछ तत्व उत्तरदायी होते हैं जो विकारोत्पादक तत्व कहलाते हैं -

यथा - ○ लिंग ○ पुरुष
○ वचन ○ वाच्य
○ काल ○ भाव

" विकारी तथा अविकारी पदों की व्यवस्था हिंदी के मानकीकरण हेतु उत्तरदायी है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

ब्रजभाषा, शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुयी है जो अपनी ध्वन्यात्मकता तथा कलात्मकता हेतु समादृत है।

सूरपूर्व युगीन ब्रज भाषा -

अमीर खुसरो द्वारा मिश्रित रूप में उपयोग अन्य भाषायी शब्द भी शामिल यथा -

- जोहि तोहि (अवधी)
- आपन, हमार (पूर्वी)
- महगी (पंजाबी)

सूर युगीन -

1. ध्वनिगत विशेष -

'ण' वर्ण की बहुव्याप्ति
- जोगी स्वांई जाणिये जग तैं रहै उदास

2. ऐ तथा औ वर्णों का अधिकाधिक प्रयोग

ज्यों ज्यों नर स्वारथ कौं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. प्राय: हि विभक्ति से ही कारकों का काम लिया जाता था

4. वर्तमान काल - करत, जात
भूत —— . कियो, कियों
भविष्य —— . करहिं, जाहिं

5. बहुवचन बनाने हेतु आँ तथा अनुनासिक का उपयोग
अखियाँ हरिदर्शन को भूखीं।

"इस प्रकार अपनी सशक्त व्याकरण के बल पर ब्रजभाषा मध्यकाल की प्रमुख काव्यभाषा बनी रही"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

केलॉग का हिंदी व्याकरण ग्रंथ:

हिंदी भाषा के आरंभिक व्याकरण लेखन में से एक है -

- केलॉग द्वारा किया गया व्याकरण लेखन आगे पुरुषोत्तम दास टंडन कामताप्रसाद गुरु तथा किशोरीदास वाजपेयी को मार्गदर्शित करता रहा।
- केलॉग अपने ग्रंथ में हिंदी की 2 प्रमुख मध्यकालीन बोलियों अवधी तथा ब्रज को आधार बनाया।
- केलॉग का व्याकरण ग्रंथ, विदेशी परंपरा से प्रभावित नहीं है.
- इसके विपरीत उन्होंने हिंदी पर भारत की अन्य भाषाओं के प्रभाव को उद्घाटित किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⊙ देवनागरी के साथ-२ हिंदी की अन्य तीनों लिपियों का संकलन भी किया गया है।

⊙ आरंभिक व्याकरण लेखन के बावजूद केलॉग का व्याकरण ग्रंथ वैज्ञानिकता को धारण करता है।

"केलॉग का व्याकरण ग्रंथ, अन्य ग्रंथों के संदर्भ की भूमिका के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखता है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⊙ मध्यकाल में प्रबंध काव्य तथा औदात्य संवेदना को धारण करने वाली एकमात्र भाषा अवधी का परिष्करण सूफी काव्य के द्वारा हुआ।

सूफी काव्यधारा लोक तत्वों का निर्वहन करती है तथा इस काव्यधारा के अधिकांश कवि संस्कृत तथा अन्य परिनिष्ठित भाषाओं के ज्ञाता नहीं थे अतः इन कवियों द्वारा अपनी संवेदना को उद्घाटित करने के क्रम में ठेठ अवधी का प्रयोग किया गया है।

यथा- कुतबन - मृगावती
मंझन - मधुमालती
कासिमशाह - हंसजवाहिर
जायसी - पद्मावत।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सूफीकाव्यधारा का अवधी को प्रमुख योगदान उसमें माधुर्य का समावेश है यथा -

दाउद कवि जो चांदा गाई
जेई रे सुना सो गा मुरझाई ॥

आचार्य शुक्ल द्वारा भी जायसी की अवधी के माधुर्य की प्रशंसा की गयी है - यह माधुर्य भाषा का माधुर्य है ....

सूफी कवियों ने अपनी भाषा में लोक संस्कृति के तत्वों को शामिल कर अवधी को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया है - यथा -
हिय, दवंगरा.

सूफी काव्यधारा के कवियों ने प्रबंध शैली में रचनाएँ की ।जिससे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अवधी में प्रबंधात्मक गुणों में वृद्धि हुयी तथा आगे चलकर यह लोक चरित प्रबंध - रामचरित मानस की भाषा बनी।

"इस प्रकार, रामभक्ति काव्यधारा की भाषा बनाने, माधुर्य गुणों के समावेश आदि की दृष्टि से सूफी काव्यधारा का अवधी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान,

दक्षिणी राज्यों में हिंदी कि राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार प्रसार में तमिलनाडु में आधारस्तंभ के रूप में कार्य किया।

तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार.

1. सी. राजगोपालाचारी ने हिंदी के पक्ष में सद्भावना निर्माण में विशेष योगदान दिया।

2. महात्मा गांधी द्वारा गठित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने समाज तथा विद्यालय के स्तर पर हिंदी का प्रचार प्रसार किया।

3. तमिलनाडु या तत्कालीन मद्रास में हिंदी के अध्ययन - अध्यापन हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर भारतीय राज्यों से अध्यापक भेजे गये।

4. चूँकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मद्रास में सक्रिय थी अतः उसके अधिवेशनों कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से हिंदी का प्रचार प्रसार हुआ।

5. मराठी तथा बंगाली हिंदी प्रेमियों ने भी तमिलनाडु में हिंदी भाषा के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

6. संविधान सभा की बहसों में हिंदी को राष्ट्रीयभाषा बनाने के पक्ष में तमिलनाडु के प्रतिनिधियों का विशेष योगदान रहा है।

हालांकि स्वतंत्रता के उपरांत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

क्षेत्रीय राजनीतिक हितों ने क्षेत्रीय भाषा तथा लाभ से प्रेरित होकर राज्य में हिंदीविरोधी वातावरण कायम किया हुआ है।

∴ राजनीतिक सहनशीलता तथा त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से राज्य में हिंदी को संपर्क भाषा बनाने की ओर कार्य किया जाना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी की सभी बोलियों में समान ऐतिहासिक विरासत तथा उत्पत्ति के कारण गहरे संबंध हैं जो निम्नवत देखे जा सकते हैं.

1. हिंदी की सभी बोलियाँ प्राकृत तथा अपभ्रंश से ही विकसित हुयी हैं.

11.

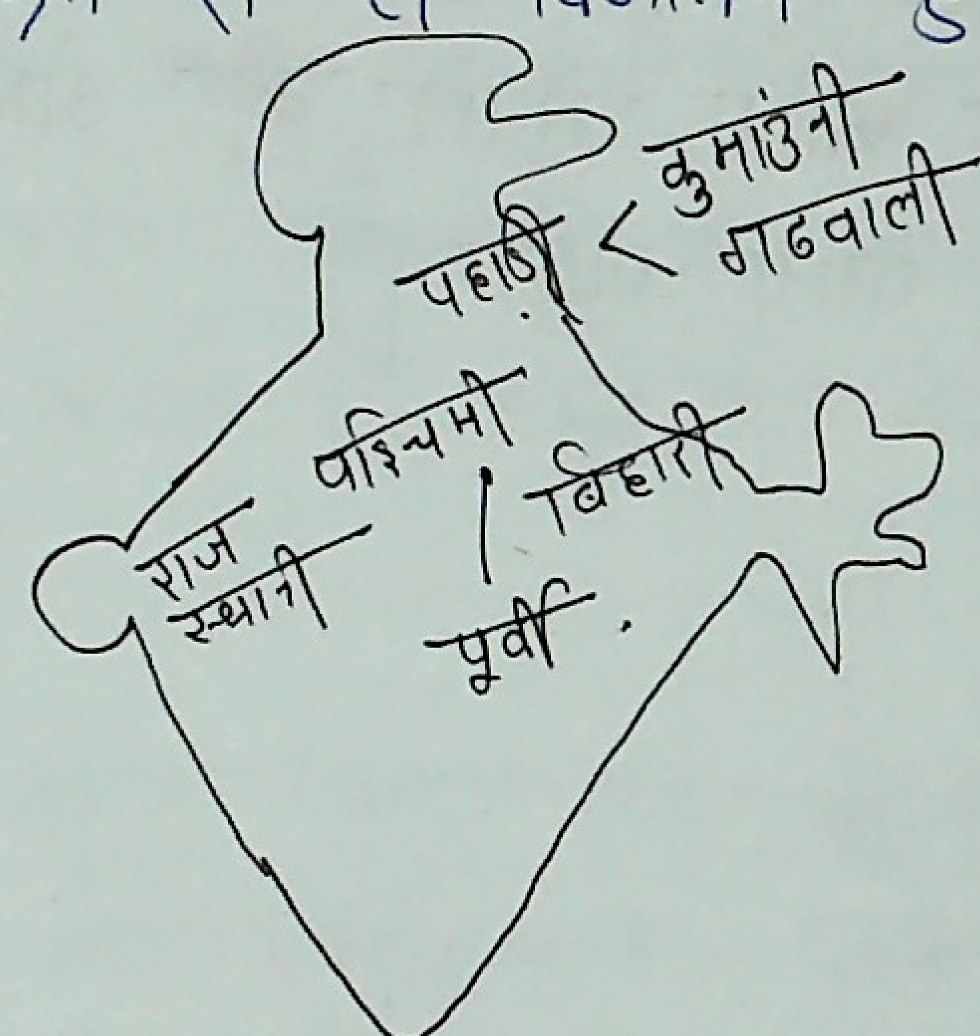

मानचित्र के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि बिहारी तथा पूर्वी हिंदी की बोलियों में अधिक समानता परिलक्षित होती है वहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

राजस्थानी तथा पश्चिमी हिंदी की बोलियों में अपेक्षाकृत अधिक समानताएँ हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. राजस्थानी बोली ट वर्ग बहुला है. यही प्रवृत्ति हम हरियाणवी बोली में भी देख सकते हैं।

4. ण तथा न का प्रयोग राजस्थानी तथा ब्रज दोनों बोलियों में होता है

5. हिंदी की अधिकांश बोलियाँ ओकारांत होती हैं।

6. बिहारी हिंदी की भोजपुरी, मगही तथा मैथिली में सर्वनामों की उभयनिष्ठता पायी जाती है.
यथा- हमारा, तोहरा, ओकरा.

7. पहाड़ी हिंदी की बोलियों में अनुनासिकी-करण की प्रवृत्ति सामान्य बात है.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. छत्तीसगढ़ी तथा अवधी में महाप्राणीकरण समान है

कचहरी > कछेरी

9. बुंदेली तथा दक्खिनी हिंदी समान रूप से अल्पप्राणीकरण को धारण करती हैं.

धोखा > धोका

"चूँकि उत्पत्ति तथा स्रोत समान हैं अत: हिंदी की बोलियाँ एक दूसरे से पर्याप्त समानता दिखाती हैं"।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल समेत प्रमुख भाषायी विद्वानों ने मध्यकाल में ब्रजभाषा की प्रसिद्धि का कारण ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता को ही माना है।

जहाँ अवधी अपने औदात्य के लिए जानी जाती है वहीं ब्रज भाषा का समानांतर पद ही कलात्मकता तथा नाद सौंदर्य है।

ब्रजभाषा में निहित कलात्मकता हेतु निम्न कारणों को उत्तरदायी माना जा सकता है यथा.

1. ब्रजभाषा का प्रारंभिक स्वरूप अमीर खुसरो के काव्य में दिखता है। खुसरो सूफी कवि थे तथा सल्तनत के दरबारों से जुड़े हुये थे अतः उनकी भाषा में कलात्मकता अनिवार्य हो जाती है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मेरा मोसे सिंगार करावत आगे बैठ के
मान बढ़ावत
वासे चीकन न कोउ दूसा ऐ साधी ! साजन
न साखि सीसा .

II. ब्रजभाषा की मूल संवेदना कृष्ण
भक्ति है जहाँ राम औदात्य का
प्रतीक हैं वहीं श्रीकृष्ण शृंगार तथा
चंचलता को धारण करते है।
यह ब्रजभाषा में निहित
कलात्मकता का प्रमुख कारण है.
बतरस लालच लाल की मुरली धरी
लुकाय ...... ।

III. ब्रजभाषा में कविता करने वाले
कवि अपनी काव्यात्मक क्षमताओं से
भी इसमें कलात्मकता को बढ़ाते हैं.
चाहे वह खुसरो हों, सूर हों या
बिहारी सहित समस्त रीतिकाल.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

IV. ब्रजभाषा का प्रसिद्ध काल कृष्ण
भक्ति काव्य रहा है, चूँकि इस समय
संवेदनागत वैविध्य अधिक नहीं था
अतः सूर समेत सभी कवियों ने
भाषायी क्षमताओं में वृद्धि की। जिससे
ब्रज की कलात्मकता में अभिवृद्धि
हुयी।

V. आगे रीतिकाल में ब्रजभाषा को
दरबार का आश्रय प्राप्त हुआ तथा
वह काल अपेक्षाकृत राजनीतिक स्थायित्व
का काल था, ऐसे में राजाओं
द्वारा साहित्य को आश्रय दिया गया।

VI. दरबारी आश्रय में शृंगार रचनाओं
तथा चमत्कार की अपेक्षा की जाती
है अतः रीतिकाल में ब्रजभाषा की
कलात्मकता अपनी चरम स्थिति पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पहुँच गयी।

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत है नैननु ही सों बात ॥

घनानंद तथा आदि रीतिकालीन कवियों ने बृज में कलात्मकता के साथ-२ उसमें ध्वन्यात्मकता का पुट भी लाया।

भरि रही भनक भनक तार ताननि की
तामें झनक चुरीन की॥

"इस प्रकार बृजभाषा की कलात्मकता जहाँ उसे शृंगार रस की महत्वपूर्ण भाषा बनाता है तो वहीं उसमें आधुनिकता के अभाव हेतु भी जिम्मेदार है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बृजभाषा भक्ति तथा रीतिकाल की प्रतिनिधि भाषा रही है हालांकि इसका उद्गम आदिकाल में देखा जा सकता है।

शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित बृज भाषा में प्रारंभिक रचनाकार्य भक्ति-व्यक्ति प्रकरण तथा पृथ्वीराजरासो को माना जाता है।

साथ ही अमीर खुसरो के काव्य में तो बृजभाषा का स्वरूप मध्य काल के समान ही प्रतिबिंबित होता है।

मेरा मोसे सिंगार करावत आगे बैठ के मान बढ़ावत
वासे चीकन न कोऊ दूसा। ऐ सखि साजन न सखि खोसा।

अमीर खुसरो ने बृज में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

निहित कलात्मक तथा माधुर्य गुणों को उद्घाटित किया था.

इसके साथ ही ब्रज भाषा सिखों के प्रथम 5 गुरुओं की भी भाषा थी.

जनम जनम का विछुड़िया मिलिया
साध क्रिया ते रुखां बिरिया ॥

सूरदास से पहले संत कवियों की पंचमेल खिचड़ी के भाषा में भी ब्रजभाषा के संकेत देखे जा सकते हैं.

संतो धोखा कासू कहिये
गुण में निरगुन निरगुन में गुन
बाट छाड़ि क्यों बहिए।'

" हालांकि सूरयुगीन ब्रजभाषा भले ही कवियों द्वारा प्रयोग की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जाती रहे हो किंतु ब्रजभाषा, काव्य की प्रतिनिधि भाषा सूरयुग में ही बनी तथा रीति काल में ब्रज भाषा काव्य की एकमात्र भाषा बन गयी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) लोकमंगल की अवधारणा को प्रसारित करने में अवधी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी में उपस्थित औदात्य.

अवधी की माधुर्य धारण करने की क्षमता तथा तुलसी जैसे कवियों की भाषा होने की वजह से, वह लोकमंगल की संवेदना को प्रभावी तरीके से प्रसारित करती है.

1. जहाँ ब्रजभाषा लोकमंगल की सिद्धावस्था की भाषा थी वहीं अवधी आचार्य शुक्ल के अनुसार लोकमंगल की साधनावस्था को उद्घाटित करती है।

2. सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त ठेठ अवधी, लोकमंगल की भावना के अनुरूप समन्वयकारी कथावस्तु की भाषा बनती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. अवधी में लोकमंगल की साधना-वस्था का चरम स्वरूप तब दिखता है जब तुलसीदास रामचरित मानस की काव्यभाषा के रूप में अवधी का चयन करते हैं.

4. रामचरितमानस के किरदारों का औदात्य तथा अवधी का अपना औदात्य उसे लोकमंगलकारी कथा-वस्तु की प्रतिनिधि भाषा बनाता है.

5. सूफीकाव्यधारा तथा रामभक्तिकाव्य धारा में उपस्थित लोक संस्कृति के तत्व तथा कल्याण की चेतना आदि अवधी की भाषायी क्षमता में गुणात्मक वृद्धि करते हैं और इसे गरिमापूर्ण लोकमंगलकारी भाषा का दर्जा दिलाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

![दृष्टि The Vision logo]

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"इस प्रकार अवधी सूफी तथा राम भक्तिकाव्य धारा दोनों की संवेदना के अनुरूप लोकमंगलकारी पक्ष को उद्घाटित तथा प्रसारित करती हैं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation